'वेव्स' संस्था के बाईसवें भारत-सम्मेलन का उद्घोष :
'सभी भारतीय कलाओं का मूलस्वरूप वेदों में प्राप्त होता है।'

वृहत्तर-वैदिक-अध्ययन-परिषद (वेव्स WAVES) के 22 वें भारत-सम्मेलन में एकमत से सभी विद्वानों ने यह निष्कर्ष निकाला कि जितनी भी भारतीय कलाएं आज भारत में या विश्व में प्राप्त होती हैं उन सभी का मूल स्वरूप वेदों में देखा जा सकता है। उनके अनन्त विस्तार को वैदिक परिप्रेक्ष्य में समझा जा सकता है। शिल्पकला, वास्तुकला, चित्रकला, लेखनकला, आभूषणकला, प्रहेलिकाकला, नाट्यकला, काव्यकला, ललितकला, संगीतकला, नृत्यकला, वाद्यकला, स्थापत्यकला, युद्धकला आदि पर भारत के विभिन्न भागों से पधारे विद्वानों के द्वारा लगभग 80 शोधपत्र प्रस्तुत किए गए और उन पर विचार विमर्श हुआ। साथ ही वैदिक ज्ञान की गंभीरता और विविधता पर विमर्श किया गया। वेव्स के सचिव डा० रणजित बेहेरा एवं डा० अपर्णा धीर खन्डेलवाल ने उद्घाटन तथा समापन सत्रों का संचालन किया।

यह सम्मेलन इंदिरा-गांधी-राष्ट्रीय-कला-केंद्र, दिल्ली के 'भारत-विद्या-प्रयोजना' प्रकल्प के सौजन्य से 'इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र' के मुख्य सभागार में 3 दिनों (27 से 29 नवंबर, 2018) में सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। प्रथम दिन प्रात: में इसका उद्घाटन कला-केंद्र के सदस्यसचिव डॉ सच्चिदानंद जोशी, भारतीय-विद्या-भवन के निदेशक श्री अशोक प्रधान, नेपाल से पधारे विशिष्ट-अतिथि डॉ संहिताशास्त्री अर्जुनप्रसाद बस्तोला, भारतीय-दर्शन-परिषद् के अध्यक्ष प्रोफेसर एस०आर० भट्ट, वेव्स के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष रहे प्रो० भूदेव शर्मा, भारतसम्मेलन की मुख्य-संयोजिका और वेव्स की अध्यक्षा डॉ शशि तिवारी, तथा भारतसम्मेलन के संयोजक एवं भारत-विद्या-प्रयोजना के निदेशक डॉ सुधीर लाल के द्वारा दीप-प्रज्वलन से किया गया । सस्वर वेदपाठ से मंगलमय हुए वातावरण में डॉ सच्चिदानंद जोशी ने सबका अभिनन्दन करते हुए उद्घाटन-वक्तव्य दिया तथा सम्मेलन की स्मारिका का विमोचन किया।

मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए श्री अशोक प्रधान ने वर्तमान शिक्षापद्धति में प्राचीन ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा के समन्वयन की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि वेद समस्त विद्याओं का आदिस्रोत हैं और भारत की पहचान हैं । विशिष्ट-अतिथि डॉक्टर बास्तोला ने वेदों में कृषिकला की विकसित अवस्था का चित्रण किया। उन्होंने कहा कि कृषिकला के द्वारा ही मानवसभ्यता का विकास हुआ है । धनवंतरी के द्वारा बताई गई चिकित्सा कला से मानव को स्वास्थ्य-लाभ की दिशा दिखाई गई है। प्रोफेसर एस०आर० भट्ट ने अपने आधार-वक्तव्य में आनंद-मीमांसा को भारतीय चिंतन का मूल उत्स बताया। कलाओं का उद्देश्य आनंद और फिर

सच्चिदानंद को प्राप्त करना है। इससे ही परमार्थ की प्राप्ति होती है; कलाकार ही आनंद का आस्वादन करता है। निकृष्ट और उत्कृष्ट दोनों ही व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करते हैं, परंतु संस्कृति हमें उत्कृष्ट की ओर जाने की प्रेरणा देती है, जिससे आनंद की उपलब्धि होती है। प्रोफेसर भूदेव शर्मा ने वर्तमान शिक्षा-पद्धति में भारतीयविद्या में दर्शाए गए मार्गों को अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। डॉ शशि तिवारी ने सभी विद्वानों का स्वागत करते हुए सम्मेलन के मुख्य विषय की महत्ता और विस्तार का विवरण दिया। वेव्स के पिछले सम्मेलनों में जिन वेद्परक विषयों की विवेचना एवं प्रकाशन हो चुके हैं उनका विवरण भी दिया। संयोजक पद से सभी को धन्यवाद देते हुए डॉक्टर सुधीर लाल ने सभी प्रमुख कलाओं को परस्पर एक दूसरे से जुड़ा हुआ बताया और भारतीय ज्ञान-परंपरा के विस्तृत और सूक्ष्म तंत्र की चर्चा की।

यह सम्मेलन 13 अकादमिक सत्रों में विभाजित था जिसमें भारतीय और विदेशी विद्वानों ने अनेक संबद्ध विषयों पर चिंतन किया। विदेशी विद्वानों में फ्रांस के डॉक्टर कॉमा कार्पेंटियर, नेपाल के डॉक्टर संहिताशास्त्री, अमेरिका से पधारे डॉक्टर राजवेदम विशेषतया उल्लेखनीय हैं; जिनके विचार भारतीय धरोहर के प्रति गर्व की प्रतीति कराते हैं। इस सम्मेलन में युवा विद्वानों के शोधपत्र और उनकी प्रस्तुति का मूल्यांकन भी किया गया, अनन्तर उसके आधार पर निर्णायकों के रूप में विद्यमान रहे डॉ० धर्मा, डॉ० अंजू सेठ एवं डॉ० पंकज मिश्रा ने पुरस्कारों की घोषणा की। जे०एन०यू० की खुशबू शुक्ला को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। तदर्थ पुरस्कार-राशि श्रीमती कुसुम शर्मा की पुण्यस्मृति में प्रो० भूदेव शर्मा द्वारा दी गई ।

सम्मेलन के तीसरे दिन समापनसत्र में दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ जीतराम भट्ट एवं भारतीय विद्या भवन के संस्कृत संकाय की डीन प्रोफेसर शशिप्रभा कुमार विशिष्ट अतिथियों के रूप में उपस्थित थे। डॉक्टर जीतराम भट्ट ने कहां कि ज्ञान, कला, विद्या, अविद्या सब एक बिंदु पर पहुंच कर मिले-जुले लगते हैं। प्रॉ० शशिप्रभा कुमार ने पंच तत्वों की शुद्धि की बात की और विचार का संबंध आचार से बताया | उन्होंने कहा कि वेद इन दोनों को जोड़ने की बात करता है। इस अवसर पर डॉ० राजवेदम ने समापन वक्तव्य दिया जिसमें उन्होंने सिद्ध किया कि भारतीय संगीत का मूल सामवेद में है। जोधपुर से आए प्रोफेसर रामगोपाल ने वेव्स के सम्मेलन की सार्थकता की बात की। अलीगढ़ से आए तहसील मंडल ने वेव्स के सम्मेलन की व्यवस्था और आकर्षण को उसकी सफलता का कारण बताया। वेव्स की अध्यक्षा डॉ शशि तिवारी के धन्यवादप्रस्ताव के अनन्तर, सस्वर वेदपाठ और राष्ट्रगान के साथ यह सम्मेलन संपन्न हुआ।